Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 73-78

मेवाती लोकगीतों में लोक संस्कृति

रामजीत यादव

सहायक आचार्य, हिन्दी
शहीद जीतराम राजकीय महाविद्यालय नगर, डीग (राजस्थान)
शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

मेवात क्षेत्र तीन राज्यों के भू-भागों पर फैला हुआ है। हरियाणा के गुडगाँव, नूँह, फरिदाबाद तथा राजस्थान के अलवर व भरतपुर एवं उत्तर प्रदेश के मथुरा के कोसी एवं छाता में इस अंचल का विस्तार है। इस क्षेत्र की अपनी बोली है जिसे मेवाती कहते हैं। मेव जाति बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण ही इस क्षेत्र को मेवात कहते हैं। मेवाती लोक साहित्य में लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकगीत तथा लोक कहावत, मुहावरे, पहेलियाँ सम्मिलित हैं। मेवाती लोक साहित्य में मेवाती लोकगीत सर्वाधिक प्रचलित है। मेवाती लोकगीतों में बिरहडा, बारहमासा, मेवाती होली के रसिया, मरसिया एवं सिंगलवाटी के अलावा संस्कार, ऋतु, श्रम, नीति, श्रृंगार, शोक, देवी-देवताओं, पीर-पंचपीरों के गीत तथा पर्व त्यौहारों के गीत आते हैं। इन गीतों में नारी की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण है। इसी के साथ इन गीतों में मेवात के किसानों की शैक्षिक एवं आर्थिक रूप से पिछडेपन की दास्तां है। मेवाती लोकगीतों में समाज में व्याप्त बालविवाह, अनमेल-विवाह, दहेज-प्रथा, मृत्युभोज, विधवा-विवाह आदि कुप्रथाओं एवं कुरीतियों का यर्थाथ चित्रण हुआ है। अब कुछ लोकगीत फिल्मी धुनों पर चल पडे हैं। सिंगलवाटी गीत इस समय खूब प्रचलन में है जिनमें मेवात के बदलते स्वरूप की अभिव्यक्ति मिलती है। मेवाती लोकगीतों में नारी चेतना के प्रखर स्वर सुनाई देते हैं। साथ ही मेवात क्षेत्र के शैक्षिक एवं आर्थिक उन्नयन की छटपटाहट भी अभिव्यंजित है। इस समय मेवात क्षेत्र टटलूबाजी (ठग गिरोह), राहजनी, चोरी, लूटपाट व साईबर ठगी जैसे आपराधिक एवं अमानुषिक गतविधियों में लिप्त है। अतः इस भयावह युग में मेवती लोकगीतों की महती प्रासंगिकता है। जिससे मेवात की सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहे सके।

संकेताक्षर—*मेव, मेवात, लोक-साहित्य, बिरहडा, मरसिया, सिंगलवाटी*

प्रस्तावना

मेवात क्षेत्र देश की राजधानी दिल्ली एवं राजस्थान की राजधानी जयपुर के लगभग मध्य में आबाद है जिसका विस्तार हरियाणा के गुडगाँव जिले का दक्षिणी भाग फरीदाबाद जिले का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं नूँह जिले के नगीना, पुन्हाना, झिरका फिरोजपुर, तावडू व हथीन आदि उपखण्ड राजस्थान के अलवर जिले के तिजारा, किशनगढ, रामगढ, लक्ष्मणगढ एवं गोविन्दगढ उपखण्ड भरतपुर जिले के कामां, पहाडी, सीकरी, नगर उपखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के कोसी व छाता उपखण्डों में है।

मेवात शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में अनेक विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत प्रकट किए हैं। मेवाती बोली के अधिकारी विद्वान डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा लिखते हैं। 'सप्त-सिंधु के अंक (मई 1970) में हमने इस विषय पर अत्यंत गंभरीता से विचार किया है। निष्कर्षतः मेवात शब्द संस्कृत के कल्पित रूप मेदत्रा-मेवता-मेवात्तो-मेवात से व्युत्तपन्न है।'[1] मेवात के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री सिद्दीक अहमद मेव मेवात शब्द की व्युत्पत्ति मेव जाति की बहुलता को मानते हैं। 'दरअसल मेवों की भूमि होने के कारण ही मेवात क्षेत्र का नाम मेरवात-मेरात-मेवात पड़ा।'[2]

मेवात के सीमांकन के संबंध में एक दोहा स्थानीय लोगों में बहुत प्रसिद्ध है—

'इत दिल्ली उत आगरो, इत अलवर बैराठ।
कालो पहाड़ सुहावणो, जाके बीच बसे मेवात।'[3]

प्रत्येक क्षेत्र या अंचल की लोक संस्कृति का स्वरूप भिन्न होता है। जो उस क्षेत्र विशेष को उसके निकटस्थ तथा सुदूर स्थित क्षेत्रों से अलग करता है। इस दृष्टि से मेवात की अपनी एक अलग लोक संस्कृति है। प्रशासनिक दृष्टि से चाहे मेवात देश की तीन राज्यों के खण्ड-उपखण्डों में फैला है। लेकिन इस क्षेत्र विशेष की भाषिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं धार्मिक विशेषताओं में एक मौलिक साम्य परिलक्षित होता है। इस क्षेत्र के जीवन मूल्य, आस्थाएँ, परम्पराएँ, लोक विश्वास और लोक मान्यताएं आदि एक जैसे हैं। जो इसे एक लोक संस्कृति में आज तक बांधे हुए हैं। इसलिए मेवात एक प्रशासनिक इकाई नहीं होते हुए भी एक क्षेत्र या अंचल विशेष है।

किसी भी अंचल या क्षेत्र विशेष की अपनी अलग लोक संस्कृति होती है। जिसमें उस क्षेत्र विशेष के रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वस्त्राभूषण-पहनावा, तीज-त्यौहार, पर्व-उत्सव, मेले-ठेले, आचार-विचार, परंपराएं, विश्वास, मान्यताएं आदि समाविष्ट होते हैं। उस लोक संस्कृति का दिग्दर्शन लोक साहित्य में होता है। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है। अतः किसी भी अंचल विशेष को जानना हो तो वहां के लोक साहित्य को देखना होगा।

लोक साहित्य दो शब्दों के योग से बना है-लोक और साहित्य। लोक अर्थात सभ्यता के प्रभाव से दूर अपनी सहज अवस्था में वर्तमान जनता जिनके ज्ञान का आधार शास्त्र नहीं बल्कि निजी अनुभव होते हैं ऐसी जनता का साहित्य लोक साहित्य है। 'लोक साहित्य शब्द अंग्रेजी का अनुवाद है। यह अंग्रेजी के जिस शब्द का अनुवाद है वह है फोक लिटरेचर। फोक का पर्याय लोक है और लिटरेचर का साहित्य।'[4] 'सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहजावस्था में वर्तमान जो निरक्षर जनता है उसकी आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि, सुख-दुख आदि की अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्राप्त होती है उसे लोक साहित्य कहते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य जनता का वह साहित्य है जो जनता के द्वारा, जनता के लिए लिखा गया हो।'[5] 'जन को समझने के लिए लोक साहित्य को समझना परम आवश्यक है। बिना उसके जन की मानवीय आवश्यकताओं को ठीक-ठीक नहीं समझा जा सकता है।'[6] डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक साहित्य को लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य, लोकसुभाषित इन पाँच भागों में विभाजित किया है।

एक ओर जहां मेवात के साहित्य को लालदास, चरणदास, सहजोबाई, दयाबाई, भीकजी जैसे संत कवियों अपने वचनामृत से पुनीत किया वहीं दूसरी ओर सादल्ला, अलीबक्श, हजरत खक्के, दानशाह, नबी खां, मीर खां, ऐवज, नत्थू और गुलजारी जैसे लोक कवियों की कविता कामिनी आज भी जनमानस की जिह्वा पर नृत्य करती है। यह मेवाती लोक साहित्य मीरासी, नट, नाई, जोगी आदि के द्वारा विभिन्न अवसरों पर गा-गा कर मौखिक परंपरा से जीवित है। मेवाती लोक साहित्य को सिद्दीक अहमद मेव ने मेवाती बात साहित्य, मेवाती कहावतें, मुहावरें व पहेलियां, मेवाती दोहा परंपरा और मेवाती लोकगीत इन चार भागों में वर्गीकृत किया है।

लोकगीत लोक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। लोक में लोक साहित्य के दूसरे रूपों की अपेक्षा लोकगीत सबसे अधिक प्रचलित है। 'लोकगीत जनमानस के स्वाभाविक उदबोधनों का नैसर्गिक प्रस्फुटन है।'[7] लोकगीतों में संपूर्ण लोक संस्कृति की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यंजना होती है। लोकगीत जनमानस की आत्मा है। लोकगीतों में प्रत्येक पक्ष का मार्मिक चित्रण होता है। 'वह गीत जो लोकमानस की अभिव्यक्ति हो अथवा जिसमें लोकमानसाभाष भी हो लोकगीत के अंतर्गत आएगा।'[8] 'घर के संकुचित क्षेत्र में जीवन की जिन अनुभूतियों का साक्षात्कार मनुष्य करता है उन्हीं की झांकी हमें इन लोकगीतों में देखने को मिलती है।'[9]

मेवाती लोक साहित्य में मेवाती लोकगीत बहुप्रचलित विधा है। मेवाती लोकगीतों में मेवाती लोक संस्कृति की झांकी स्पष्ट दिखाई देती है। इनमें जहां एक ओर व्यक्ति की आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, सुख-दुख की अभिव्यक्ति है वहीं दूसरी ओर सामाजिक संरचना जन्म-विवाह आदि संस्कारों, होली-ताजिया आदि पर्व-त्यौहारों, गंगा-जमुनी तहजीब, मेवात का शैक्षिक पिछडापन व आर्थिक बदहाली, नारी-चेतना तथा मेवाती जनमानस के विविध आयामों का स्वाभाविक एवं सहज चित्रण है। मेवाती लोकगीतों में संस्कार गीत, ऋतु गीत, देवी देवताओं एवं पीर पंचपीर के गीत, पर्व त्यौहार के गीत, जाति गीत, सिंगलवाटी, नीतिपरक गीत, शोक गीत, मरसिया, हम्द/नात, रतवाई, बिरहडा, मेवाती रसिया और बारहमासा प्रसिद्ध

हैं।'मेवात एक विशेष अंचल है। जिसकी संस्कृति दूसरे क्षेत्रों से अलग है। यह भिन्नता उसकी गीतों में स्पष्ट दिखाई देती है। जो गीत मेवात के अलावा दूसरे क्षेत्रों में नहीं मिलते उनमें मेवाती होली, बिरहडा, मरसिया, रतवाई तथा सिंगलवाटी महत्वपूर्ण है।'[10] मेवाती लोकगीतों में मेवात अंचल की सांस्कृतिक चेतना अभिव्यंजित है। जिसे निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है।

वस्त्राभूषण एवं वेशभूषा

मेवाती लोकगीतों में मेवातियों के विभिन्न प्रकार के वस्त्राभूषणों का उल्लेख हुआ है। पहले मेवात के हिंदु एवं मेवों के वस्त्राभूषण एक जैसे थे। तबलीकी जमात के कारण मेवों के पहनावें में कुछ अंतर आया है। पहले मेव स्त्रियां चोली और घाघरा पहनती थी। बाद में खूसनी, कुर्ती, सूट सलवार, जम्फर आदि पहनना शुरू किया। इस संबंध में एक मेवाती लोकगीत बहुत प्रचलित है—

'सुनियो मेरा साईबा, दखियो मैं समझाउं तोय।
फाका तो मंजूर हां, कुडती मही कली की होय।
नाचाहियां तेरा झूमका, ना बाळी ना हार।
रेशम की कुडती सिंवां, उपर बटन लगार।'[11]

मेवाती पुरूष सेहरा, बैंत, तोलिया, फैंटा, कुर्ता धोती एवं तहमद बुशसर्ट पहनते हैं। आभूषणों में स्त्रियां अंगूठी, हंसली, कड़ा, हार, हमेल, झूमका, चूडी, चैन आदि पहनती हैं। इस दृष्टि से कुछ लोकगीत द्रष्टव्य हैं—

'सिर पे तोलिया हात में बैंत रूमाल,
अगला सू पिछलो मेरो बीरो।'
'मेरी भायेली पै सोना की जंजीर, बटन मोपै चांदी को।'
'बीरा और भी घिसडवां तहमद बांध,
मरैगी दुनिया जड-जड कै।'
'सोना का कुंडल कानन में सजा,
जण बाबा लोभी देवागौ कै नाय।'[12]

रहन-सहन एवं खान-पान

मेवात में आवास पहले मिट्टी के बने होते थे। इन पर लकडी फूंस की बनी छतें होती थी। दुमंजिला को मैडी कहते थे। मकानों में कोठा मैडी, चौबारा, हवेली, नोहरा, बंगला, पौडी, साड होती थी। अनाज हेतु कोठी कुठीला बनाए जाते थे। रसोई को उसारी कहा जाता था। मेवाती लोकगीतों में इनका उल्लेख मिलता है—

कैसे चढो जाय मोपै, उंची पिया की अटारी।
कोठे-कोठे डोले री बहोडिया, छज्जे-छज्जे डोले री मेरो जैठ।
हरो कांच को बंगला, यामे रेडियो बजवादे।[13]

मेवाती लोग मोटा झोटा खाकर गुजारा कर लेते हैं। बेझड, गोचनी, गेंहू, बाजरा आदि की रोटी दाल सब्जी के साथ व घी, दूध, दही, छाछ प्रतिदिन का खानपान है। विशेष अवसरों पर जैसे विवाह, अकीका, पर्व त्यौहारों पर खीर, गंजी, सेवई, जर्दा, पुलाव, हलवा, गोश्त रोटी लड्डू मिठाईयां बनाई जाती है। मेहमाननवाजी में चावल बूरा या शक्कर में घी डालकर खिलाते हैं। जिसे सकराना कहते हैं। इस संबंध में एक रतवाई बहुत प्रसिद्ध है—

'ओंडी रोटी घी घणो,
खालै-खालै मेरा नणदी का बीर,
तौमे तो मेरो जी घणो।'[14]

मेवाती लोग हुक्का बीडी का प्रयोग बहुत करते हैं। कुछ पढे लिखे नौजवान शराब, गुटखा, तम्बाकू, सिगरेट तथा पान का प्रयोग करते हैं।

'हुक्का मत पीवै भरतार, छोड दै सिगरट को पीनौ।'
'पान खायो जरदाई, होगी-होगी मेरी बुरशट ही खराब।'
'समझारी तेरी प्यारी, तु दारू पीणौ छोड दै।'[15]

लोकपर्व, उत्सव, त्योहार एवं मेले

मेव जाति में ईद, बकरीद, शबेरात, मोहर्रम (ताजिया) तथा हिंदू लोगों में होली, दीवाली, तीज, रक्षाबंधन, कृष्ण जन्माष्टमी, राम नवमी, दशहरा आदि त्यौहार प्रमुख रूप से मनाए जाते हैं। मोहर्रम का एक गीत मेवात में बहुत प्रसिद्ध है—

'दिखादै मेरी माई, अलवर का मोलू ताजिया।
हूं हबदा दूंगी जाकै, देखूंगी माई ताजिया।'[16]

मेवात में चूहडसिद्ध, सिलीसेढ, सांई लालदास, बुलंदशाह, शेखमूसा, लहरदेव, अल्लाह, हसनपुर बारा के प्रसिद्ध मेले लगते हैं। एक लोकगीत में मेव स्त्री सिलीसेढ के मेले में जाने का आग्रह अपनी मां से कर रही है—

'जुडवा दै गाडी बैल माई, सीळी देखन जाउंगी।'[17]

लोक मान्यताएं एवं लोक विश्वास

लोक विश्वास में लोक जीवन की भौतिक और धार्मिक चेतना समाहित होती है। मेवाती लोक समाज में देवी देवता, पीर पंचपीर, भूत प्रेत, स्वप्न, शकुन अपशकुन, जादू टोना आदि सम्मिलित हैं। लगभग प्रत्येक गांव में चामुण्डा देवी, भूमिया देव और भैरों पाए जाते हैं। मेवाती लोग इनसे मन्नत मांगते हैं। इस संबंध में कुछ लोकगीत द्रष्टव्य हैं—

'पांचो पीर अरथ सू उतरे गरद उठै असमानी।
देखो लाल या सायब की बाणी।'

'मेरी मनसा पूरी होगी माई या चूहडसिद्ध का मेला में।'[18]

'खेडे की चामड माय, सेवा तेरी कौन करे
सेवा तेरी उई करे जो गाम को भूमिया होय।'[19]

सामाजिक कुरीति एवं कुप्रथाएं

मेवात में अनेक कुप्रथाएं आज भी प्रचलित है। जैसे दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, टके का विवाह (बेटी के बदले पैसे लेना), बाल विवाह, मृत्युभोज (फातिया) आदि। पुत्री को बेच कर धन प्राप्त करने का एक गीत प्रचलित है जिसमें दुखी पुत्री के हरद्योदगार व्यक्त हुए हैं—

'डुबो दी मेरा बाप तेरी बण जायोढेरी।'[20]

बाल विवाह से संबंधित एक लोकगीत में नव विवाहित युवती कम उम्र के पति के साथ ससुराल जाने हेतु अपनी मां से स्पष्ट मना कर रही है—

'ना जाउं री माई याके साथ, बालम छोटो सो।'[21]

नारी की स्थिति

मेवाती समाज में नारी की स्थिति अच्छी नहीं है। उसका संपूर्ण जीवन श्रम व सेवा मे व्यतीत होता है। मेवात के आर्थिक हालात नाजुक हैं। ऐसे में यहां अल्पायु लडके लडकियों पर गृहस्थी का बोझ पड जाता है। मेवाती नारी पुरूषों के साथ खेती में कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है। कृषि कार्य के अलावा पशुओं की देखरेख चारा लाना, दूध निकालना, गोबर झाडा-बाडा, खाना बनाना, लीपा-पोती, साफ-सफाई, चोका-बर्तन आदि का काम अकेले स्त्रियां करती हैं। इसके बावजूद मेवात में स्त्रियों को तुच्छ, अबला या दोयम दर्जा का माना जाता है। उनकी शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। अधिकतर बच्चियां अशिक्षित रहती हैं और उनका जल्दी विवाह कर दिया जाता है। मेवात में एक कहावत है-'सियाणी बाहण बेटी अपणे घर भली।' मेवाती स्त्रियां दुख, विडंबना, त्रास, अभावों और यंत्रणाओं के बीच पिस जाती हैं। इनके दुखों का कारण अशिक्षा, अनमेल विवाह, बाल विवाह एवं शुल्क विवाह है। मेवाती लोकगीतों में स्त्री जीवन सर्वत्र कठिनाईयों से घिरा हुआ दिखाई देता है व जीने की अपेक्षा मर जाना चाहती है—

'जै होता मेरे पंख, कहीं उड जाती।
जै होता मेरे बीर, पीहर चली जाती।
ऐसा जीणा सू तो मर जाती।'[22]

मेवात छोड़कर मजदूरी करने बाहर गए हुए पति की वियोगिनी स्त्री की विरह वेदना इस लोकगीत में द्रष्टव्य है—

'अईयो मेरो रो-रो गुलीबंद भीगे
अईयो सुबकीन सू गळो मेरो दुखै।'[23]

मेवाती कृषक पुत्री कहती है कि हे पिता मैं तो तेरे घर के आंगन रूपी जंगल की बटेर पक्षी हूं जिधर उडा दोगे (जहां शादी कर दोगे) वहीं उड जाउंगी (वहीं चली जाउंगी)—

'बाबा मै तो तेरा जंगल की बटेर, उडावा जितलु उड जाउंगी।'[24]

बाल विवाह का सजीव चित्रण इस लोकगीत में देखने योग्य हैं—

'माई-माई मोपै रोतै भी ना आय, छोटी सी कर दी आणी जाणी।'[25]

एक प्रताडित स्त्री अपने पति से कहती है कि मुझे तू भी पीटेगा तो मुझ पर दया कौन करेगा, क्योंकि तेरा पूरा परिवार तो मुझसे लड़ता रहता है—

'तू भी मारेगौ दरेगी लेगो कौण, लडै है तेरो सब कुणबो।'[26]

गंगा-जमुनी तहजीब

मेवात में मुख्य रूप से हिन्दू और मुस्लिम धर्मावलम्बी निवास करते है। अत्यल्प संख्या में जैन, बौद्ध और सिक्ख मतावलम्वी भी रहते है यहां मेव जो बहुसंख्यक आबादी है फिलहाल मुस्लिम धर्मावलम्बी है। ये पहले हिन्दू ही थे इसलिए ये विचार से मुस्लिम और आचार से हिन्दुओं की सांस्कृतिक विरासत एवं विश्वासों को ग्रहण किये हुए है, मेवात में हिन्दू और मुस्लिम बडे प्रेम से रहते आये है। अतः मेवात की गंगा-जमुनी तहजीव धार्मिक सद्भाव का बहुत बडा उदाहरण है। मेवात में

रामलीला और रासलीला जैसे लोक नाट्यों को देखने मेवों की भीड़ उमड पडती थी। मेवाती मेव कवि सादल्ला ने तो 'पण्डून का कडा' (मेवाती महाभारत) रचा था। लालदास जो जाति से मेव थे उन्होने 'अवधविलास' (राम कथा) लिखी। मेवाती हिन्दू भी ताजिया (मुस्लिम त्यौहार) देखने जाते थे। सैय्यद पीर की पूजा हिन्दू अधिक करते हैं। पहले मुस्लिम मेव दीवाली, होली को हिन्दुओं के साथ बडे हर्षोल्लास से मनाते थे। हिन्दू लोग आज भी ईद पर मेवों को मुबारकबाद देते हैं। मेवात में धार्मिक कट्टरता दूर-दूर तक नहीं थी। मेव जाति के लोग आज भी अपने आप को श्री कृष्ण और श्री राम का वंशज मानते हैं। मेवाती लोकगीतों में हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव की अभिव्यंजना हुई है। बृज के समीप होने के कारण मेवात में आज भी श्री कृष्ण से सम्बधित अनेकों लोकगीत मीरासियों के होठों पर थिरकते हैं जैसे—

'जादू की भरी रे, कन्हैया तेरी बांसुरी।
प्रेम की भरी रे, कन्हैया तेरी बांसुरी।'[27]

'श्री गोवरधन महाराज तेरे माथे मुकट बिराज रहो।
तोपै पान चढै तोपै फूल चढै तोपै चढै दूध की धार।'[28]

मेवों की गोत्र व्यवस्था बड़ी मजबूत है। जो हिन्दू धर्म में है न कि मुस्लिमों में, यह आज भी चलती है एक मेवाती कहावत है—सगोती सो भाई बाकी सूं असनाई' एक कहावत धार्मिक सद्भाव को व्यक्त करती है—'जाट को कहा हिन्दू और मेव को कहा मुसलमान' इसी प्रकार यहां अल्लाह, पीर फकीर, सिद्ध सैय्यद, देवी दुर्गा, हनुमान, से संबधित लोकगीत गाए जाते हैं—

'बाग में अल्ला री चमन में अल्ला री।
खिल रहे पाँचों फूल, बाग में अल्ला।'[29]

देवी दुर्गा का एक लोकगीत बहुत प्रचलित है जिसे मेव जाति की स्त्रियां बहुत चाव से गाती थी—

'आक की गाडी, ढार के पइया, सुरई के बैल, जुडवावती।
मेरी माता तोईसू ध्यान लगावती।'[30]

मेवा मीरासियों द्वारा श्री कृष्ण का भजन बड़ी श्रद्धा से गाया जाता था—

'पूजगो गिरधारी रे, मथुरा गोवरधन का बीच में।'[31]

मेवात में हिन्दुओं से भी अधिक मेव गाय पालते थे और गाय का वही सम्मान करते थे जो हिन्दू लोग करते है। हाँ, वर्तमान में तबलीग जमात विदेशी कुचक्र एवं राजनैतिक षडयंत्रों के कारण कट्टरता बढती जा रही है। इस तरह के गीतों के जरिये हिन्दुओं तथा मेवो में आपसी भेदभाव बढता नहीं था। धार्मिक सद्भाव मेवात में सर्वोपरि है आज हिन्दुस्तान में जहां लोग धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता फैला रहे हैं वे लोगों को राम के नाम पर अलग-अलग कर रहे हैं। वहीं यहां के लोग श्री कृष्ण के दीवाने है, यहां के लोग धर्म से ऊपर उठ कर जीते है।

निष्कर्ष

मेवाती लोकगीतों में सांस्कृतिक चेतना के रूप में मेवात के लोगों का रहन-सहन, खान-पान, वस्त्राभूषण, पहनावा, लोकपर्व, उत्सव, त्योहार एवं मेले, लोक मान्यताएं एवं लोकविश्वास, सामाजिक कुरीति एवं कुप्रथाएं, नारी की दयनीय स्थिति, धार्मिक सद्भाव के रूप में गंगा-जमुनी तहजीब का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण मिलता है। मेवाती लोकगीतों में अभिव्यंजित गंगा-जमुनी तहजीब, धार्मिक सद्भाव, सामाजिक समरसता एवं सहिष्णुता, देश की अखण्डता एवं एकता के लिए एक मिसाल है। मेवात की महान सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भावी पीढ़ी को एकता के सूत्र में बाधने हेतु अत्यंत आवश्यक है। लोकगीतों में अभिव्यक्त मेवात के ऐतिहासिक गौरव एवं लोक संस्कृति का अध्ययन तब और भी उपादेय एवं प्रासंगिक हो जाता है जबकि मेवात क्षेत्र टटलूबाजी (ठग गिरोह), राहजनी, चोरी, लूटपाट व साईबर ठगी जैसे आपराधिक एवं अमानुषिक गतविधियों में लिप्त हो और तबलीग जमात, सियासी षडयंत्र एवं विदेशी कुचक्रों में फँसकर धर्मनिरपेक्ष मेवात कट्टरपंथ, गरीबी एवं अशिक्षा से जूझ रहा हो। अतः हम कह सकते हैं कि मेवाती लोकगीतों में अभिव्यक्त मेवाती लोक-संस्कृति सम्प्रति अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपादेय है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, डॉ. महावीर प्रसाद, मेवाती का उद्गम और विकास, लोकभाषा प्रकाशन, कोटपूतली, 1977, पृ.सं. 22
2. मेव, सिद्दीक अहमद, मेवात एक खोज, मेवाती साहित्य अकादमी, अलवर, 2019, पृ.सं. 41-42
3. मेव, सिद्दीक अहमद, मेवाती संस्कृति अध्ययन एवं अवलोकन, दोहा तालीम समिति दोहा, गुडगांवा, हरियाणा, 1999, पृ.सं. 13

4. डॉ. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2016, पृ.सं. 14-15
5. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव,लोक साहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2019, पृ.सं. 22
6. अग्रवाल, डॉ. स्वर्णलता, राजस्थान के लोकगीत, साहित्य अकादमी उदयपुर, साधना प्रेस जोधपुर, 1969, पृ.सं. 03
7. शर्मा, डॉ. लवली,खिंची, डॉ. ईश्वर सिंह, राजस्थानी लोकगीतों की शास्त्रीयता, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004, पृ.सं. 28
8. डॉ. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2016, पृ.सं. 315
9. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, पूर्वोक्त, पृ.सं. 62
10. मेवाती, माजिद, मेवाती लोकगीत, शिल्पायन बुक्स, शाहदरा, दिल्ली, 2010, भूमिका में
11. मेवाती, माजिद, मेवाती लोकगीतों में समाज और संस्कृति, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ.सं. 107
12. मौखिक परंपरा से स्वयं संकलित लोकगीत
13. मेवाती, माजिद, मेवाती लोकगीत, पूर्वोक्त, पृ.सं. 110-111
14. उपर्युक्त, पृ.सं. 113
15. मौखिक परंपरा से स्वयं संकलित लोकगीत
16. मेवाती, माजिद, मेवाती लोकगीत, पूर्वोक्त, पृ.सं. 117
17. उपर्युक्त, पृ.सं. 47
18. मेवाती, माजिद, मेवाती लोकगीतों में समाज और संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ.सं. 134-135
19. वही पृ.सं. 122
20. मेवाती, माजिद, मेवाती लोकगीत, पूर्वोक्त, पृ.सं. 100
21. उपर्युक्त, पृ.सं. 72
22. मौखिक परंपरा से स्वयं संकलित लोकगीत
23. उपर्युक्त
24. उपर्युक्त
25. उपर्युक्त
26. उपर्युक्त
27. मेवाती, माजिद, मेवाती लोकगीत, पूर्वोक्त, पृ.सं. 76
28. उपर्युक्त, पृ.सं. 77
29. उपर्युक्त, पृ.सं. 118
30. मौखिक परंपरा से स्वयं संकलित लोकगीत
31. उपर्युक्त